International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 514-515

सूफी काव्य परम्परा एक अध्ययन

Daljeet Singh
Ph.D. Student, OPJS University, Churu, Rajasthan, India

प्रस्तावना

भारतीय चिंतन में सूफी परम्परा की शुरूआत 1370 ई0 में रचित मुल्ला दाऊद की कृति 'चंदायन' से मानी जाती है। यह परम्परा संत काव्यधारा समान्तर चली थी, आलोचक इसे प्रेम काव्य धारा भी कहते हैं।'' हिन्दी में प्रेमाख्यान काव्य सूफियों की देन है। इन काव्यों में प्रेम कथा होती है और वह प्रेम एक और लौकिक था दूसरी और अलौकिक अर्थ भी लिया जाता है।''[1] सूफी काव्य का श्री गणेश मानी जाने वाली कृति 'चांदायन' उपलब्ध नहीं है। परन्तु उसके संदर्भ आने वाले परम्परागत काव्यों में अवश्य आते हैं। मृगावती, मधुमालती, पद्मावत, चित्रावली, इंद्रावती आदि इस परम्परा के अन्य काव्य ग्रंथ है। इन तथा इस परम्परा के सभी काव्य ग्रंथों में प्रेम की महत्ता प्रदर्शित की गई है और इन सभी ग्रंथों के रचयिता सूफी कवि हैं। इनका मानना है कि संसार में जो कुछ है, प्रेम ही सब कुछ है, वहीं लक्ष्य है और वही कल्याण का मार्ग है। प्रश्न बनता है कि सूफी कवियों को प्रेममार्गी तो इसलिए कहा जाता है कि उन्होंने प्रेम काव्य का सृजन किया, लेकिन सूफी क्यों कहा जाता है? इस संबंध में महत्वपूर्ण एवं सार्थक मत, ''सूफी शब्द के अर्थ के संबंध में महत्वपूर्ण मत उन लोगों का है जिन्होंने सूफी शब्द का संबंध सूफ अर्थात् ऊन से जोड़ा है। इन लोगों की धारणा है कि सूफी लोग मोटे ऊनी कपड़े पहनते थे, ये लोग ईसाई संतो का अनुसरण तथा संन्यासियों का जीवन व्यतीत करते थे, इनका जीवन सरल एवं पवित्र होता था तथा इनका संबंध अरब एवं इराक से होता था। साधक होने के कारण समाज में इनका महत्त्व था।''[2]

कहना समीचीन होगा कि ये लोग सामाजिक एवं सांस्कृतिक दोनों विचारधाराओं से पुष्ट थे। इनका ईश्वर को पाने का माध्यम प्रेम था।'' सच्चा गुरू मानवीय आत्मा का मिलन परमात्मा से करा सकता है।''[3] सूफी कवियों ने जिन कहानियों को अपना काव्य का विषय बनाया है वह हिन्दू गाथाएँ हैं, ''यहाँ लौकिक से अलौकिक की व्याख्या की गई है अलौकिक की कल्पना में शरीअत, तरीकत, हकीकत, मारिफत का प्रावधान है। इसके लिए सात साधन सुझाए हैं अनुताप, आत्मसंयम, वैराग्य, दरिद्रता, धैर्य, विश्वास, संतोष व प्रेम। इनके द्वारा अलौकिन सत्ता प्राप्य है। इनका बखान मसनवी शैली में किया गया है। यह हमारे शोध का आधार है। यहां ऐकान्तक और लोक तत्व बाह्य होता है जबकि भारतीय प्रेम पद्धति में लोक तत्व का भी ध्यान रखा जाता है, उसमें उच्छश्रृंखलता का अभाव रहता है। सूफों कवियों की प्रेम गाथा सामाजिक एवं पारिवारिक रूप से इसलिए विच्छिन नहीं होने दिया क्योंकि मसनवी शैली इसकी हाँ नहीं करती। भारतीय नारी बहुत भावुक होती और मसनवी शैली के रूपक के आधार पर भारतीय नारी प्रेम का प्राप्य है और साथ ही परमात्मा भी।''[4]

''जियत कंठ तुम हम गर लाई।
औ जो गाठि कंत तुम्हें जोरी।
मुए कंठ बही छोडत सोई।।''
आदि अंत लहिजाइना छोरी।''[5]

''मसनवी का शाब्दिक अर्थ है 'दो' यह काव्य का ऐसा रूप है, जिसमें हर शेर के दोनों मिश्रे एक ही रफीद और काफिए में होते है। हर शेर का रदीफ और काफिया आप पस में अलग–अलग भी हो सकते हैं, इसलिए मसनवीं शायर अथवा कवि को क्रम बद्ध विषय वर्णन में बड़ी आसानी हो सकती। कसीदा या गज़ल में सब शेर मे एक ही रदीफ और काफिएं की पाबंदी के कारण क्रमबद्ध वर्णन कठिन होता है, परन्तु मसनवी में ऐसा होना बाध्य नहीं है।''[6] ''गौर करने की बात है कि मसनवी में विषय की कोई सीमा नहीं होती है।''[7] कवि जिस विषय पर चाहे मसनवी लिख सकता। उर्दू/फारसी/मसनवी लिखने वालों ने, आख्यान भी लिखे है, भगवान की प्रंशसा भी लिखी है। तथा साहित्यिक परिविधि का अनुसरण करते हुए मंगलाचरण के साथ–साथ शाहे वक्त की प्रशंसा के विधानपर महाकाव्य प्रणयन भी किया है। मनसवर के लिए सप्तम विधान है। इसी सप्तम विधान पर मसनवी लिखी जाती है। इसमें कोई कलेवर सीमा का विधान नहीं होता। आठ से साठ हजार शेर इसमें होते हैं। ''फिरदौसी का शाहनामा साठ हजार शेर वाला है।''[8] मसनवी की विशेषताओं में से मुख्य रूप से जाना जा सकता है। जिस घटना या खंड का चित्रण किया जाए, वह आंखों के सामने फिरने लगे और पूरा वातावरण फिल्म बन आँखों में समा जाए। ''हिन्दी साहित्य का बिम्ब विधान इसका प्रतिरूप है।''[9]

सरल शब्दों में कहा जा सकता है, '' एक प्रकार की कविता जिसमें दो–दो चरण एक साथ रहते और दोनों में तुकांत मिलाया जाता है, यह उर्दू साहित्य की शैली है, इसमें कई शेर होते है, इनमें अन्नयानुप्रास होता है।''[10]

मसनवी शैली में प्रबंध काव्य का रूप मुहम्मद साहब की स्तुति से होता है, इसके पश्चात तत्कालीन बादशाह अथवा शाहेवक्त की प्रशंसा, गुरू की महिमा के बाद काव्य शुरू किया जाता और खंड–बद्ध वर्णन किया जाता है, यहाँ खंडो की व्यवस्था होती है यह सर्गबद्ध अथवा कांड बद्ध नहीं होता, यह भारतीय काव्य शैली की विशेषता होती है।

''पद्मावत ओहि ज्याति
रतन पदारथ मानक मोती।''[11]

एक और बात गौर करने लायक है कि सूफी अथवा मसनवी भी रचनाकार संत अथवा फकीर ही थे, इन्होंने कबीर आदि दूसरे संत काव्यधारा के कवियों के समान ही समाज सुधार का प्रयास किया है –

''नारी की झाँई परत अंधा होत भुजंग
कबीर तनकि कौन गति जै नित नारी के संग।''[12]

की निंदा नहीं की और उसे ताज्य नहीं बताया बल्कि परमात्मा का प्रति रूप माना तथा अपनी स्नेहसिक्त प्रेम माधुरी वाणी से भारतीय जन मानस में उसके महत्व को प्रतिपादित किया है। परिणामतः

भारतीय समाज का नारी को उदारता बनी। यह भक्ति काल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी। यह काव्य परम्परा सूफी काव्य परम्परा की अनमोल निधि थी। बाबा तुलसी को लोकमंगल का महानायक माना जाता है।

''ढोल गंवार शूद्र पशु नारि
यह सब ताड़व के आधिकारि।''[13]

वाला उदाहरण निश्चय ही आज समाज मुँह चिढ़ाकर सुना, पढ़ा और पढ़ाया जाता है।
हिन्दी प्रेमाख्यान कवियों की परम्परा को कवि ने काफी आगे तक बढ़ाया है। इनमें मीर, मीर हसन, दयाशंकर, नसीम, मिर्जा, शौक, कलम का नाम उदाहरण के तौर पर लिया जा सकता है।

''हालत तो यह है कि मुझको गमों नहीं फराग
दिले सोजिटा–दरूनी से जलता ज्यू चिराग
सीना तमाम चाक है,
सारा जिगर है दाग है
मजलिसो में नाम मिरे–बेदिमाग
अजब सब कि कम दिमागी पाया है, इश्तहार।''[14]

मीर की उक्त पंक्तियों में मसनवी के दर्शन होते है और यह प्रेम कवि जायसी की परम्परा से आगे की कविताई है और इन पंक्तियों का उदाहरण, ''मीर साहब का स्वभाव कठोर था, और मिजाज तुनक था,'' इसी तरह जायसी ने अपना परिचय अपने काव्य के माध्यम से इस देते हैं–

''जायस नगर मोर अस्थानू
नरक नाँव आदि अदयानू
तहां देवस दस पहुने आएऊ
भा वैराग बहुत सुख पाएऊँ।''[15]

उक्त उदहारण एवं मीर का पूर्ववत् उदाहरण मसनवी शैली का उत्कृष्ट नमूना है। जैसा कि हमने पहले कहा कि मसनवी शैली, में इन कवियों ने कथानक रूढ़ियों का प्रयोग किया है, ये कथा रूढ़ि भारतीय तथा ईरानी साहित्य का शुद्ध मिश्रण माना जा सकता है, चित्र दर्शन शुकशारिका, नायिक रूप श्रवण, नायक रूप श्रवण पर ही नायिका की तरफ आसक्ति, मंदिर में प्रिय युगल का मिलन, शैतान द्वारा बाधा उत्पन्न करना आदि चित्र एवं दृश्य इस परम्परा में देखे जा सकते हैं। साथ ही प्रेम के इस व्यापार में परियों एवं देवों का सहयोग, उड़ने वाली राजकुमारियों अपनी विशेष भूमिकाओं का निर्वाह करती है। यह सब सूफी कवियों ने प्रेम के सार्वभौमिक स्वरूप को प्रतिपादित करने के लिए किया है और यहाँ ये कवि सफल भी हुए है। यहाँ प्रेम का संयोग एवं वियोग दोनो पहलुओं का वर्णन हुआ है। साथ वीर एवं अन्य रस भी सहायक की प्रतिरूपा द्रष्टत्य हैं। प्रेम की प्रधानता के कारण ही सूफी कवियों प्रेममार्गी कवि एवं उनके काव्य को प्रेम काव्य कहा जा जाता है।
अध्ययन से बात स्पष्ट होती है कि सभी सूफी कवि ईश्वराधीन थे, प्रेम उनका मूल मंत्र था, एक ईश्वर में उनकी आस्था थी, उनके लिए हिन्दू एवं मुसलमान दोनों एक अल्लाह की संतान थे। वे जाति भेद एवं धर्म भेद एवं वर्ण भेद के खिलाफ थे। उन्होंने सामाजिक–सांस्कृतिक एकता एवं उसके आदान–प्रदान को बल दिया, हिन्दुओं की मूर्ति पूजा एवं तीर्थ यात्रा को कई कवियों ने अपनाया एवं जीवन में उतारा।
बाद में उनकी यह परम्परा पीर पूजा या मज़ार पूजा के रूप में देखी जाने लगी, यह आज तक कायम है विश्व प्रसिद्ध अजमेर शरीफ की दरगाह इसका उदाहरण है। इसके अतिरिक्त उत्तर भारत में सैयद एवं भैया पूजा परम्परा प्रत्येक गांव में देखी जा सकती है। लौकिक से अलौकिक प्रेम की अवधारणा तो संत कवियों की भी थी परन्तु सूफी समाज को प्रेम पाशा में आबद्ध करना इनका लक्ष्य नजर आता है।
''जायसी सहित सभी सूफी कवियों मुख एवं लेखनी से जो भी कुछ व्यक्त किया वह आम जनता के आश्वासनार्थ सुधा–सिंधु ही सिद्ध हुआ।'' इन कवियों का भविष्यगत दृष्टिकोण साफ एवं स्वस्थ था, हृदय की विशालता एवं परिष्कृत विचारधारा, दृढ़ इच्छा शक्ति एवं बहुमुखी जीवन दर्शन, प्रेम जीवन का आदर्श आदि इनके निजी गुण थे। प्रेम को लेकर माखन लाल चतुर्वेदी ने काहा है– कहाँ यह कौन सा तत्त्व है जो सारे ब्रह्ममांड में व्याप्त है ब्रहमांड सूना नहीं जिसके लिए पर्याप्त है।''[16]

''यह तन अल्लाह मियां सो लाई
जिहि की पाई तिहि की गाई।''[17]

''इस प्रकार प्रेम गान करते करते ये कवि हिन्दुओं/मुसलमानों में लोकप्रिय हो गए एवं उनके सच्चे हितैषी हो गए। इसका सीधा सा कारण था कि उन्होंने वाणी एवं लेखनी में कोई ऐसा संकेत नहीं छोड़। जिससे संकेत लगाया जा सके कि कहीं साम्प्रदायिक भावना हैं इसलिए इस्लामी के अनुयायी थे, मगर सूफी होने के कारण हिन्दू मुस्लिम भावना से भावना से उपर उठे हुए थे।''[8]
अस्तु कहा जा सकता सूफी संत को संत कहना समीचीन प्रतीत। वे समन्वय की बात अपने जीवन में उतारने अथवा ग्रहण करने से बिल्कुल परहेज नहीं करते थे, पीछे जिक्र किया जा चुका है कि मूर्ति पूजा/मजार पूजा हिन्दू धर्म से ली तो शहद खाने का निषेध एवं अहिंसा पालन जैन धर्म ग्रहण किया, आसन प्राणायाम के लिए सूफी योगियों के ऋणी रहे हैं। माला जपना उन्होंने बौद्धो से सीखा है। यह साामजिक सांस्कृतिक एकता प्रेम के माध्यम सोने पे सुहागा बन गयी थी। निश्चय सूफी कवियों की भाषा अवधी थी लेकिन साहित्यिक नहीं, ठेठ ग्रामीण। कहीं खंडन मंडन का जिक्र आया केवल सब को साथ चलने की प्रवृति सुझायी। नूर मुहम्मद इसमें भाषा को लेकर अपवाद है उन्होंने अपना काव्य ब्रज भाषा में लिखा हैं भाषा कोई भी हो भाव वही है। प्रेम, प्रेम, प्रेम.....।

संदर्भ सूची :–

1. डॉ0 नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास प्र0 223
2. डॉ0 रामनारायण, कबीर की समन्वय साधना पृ0 186
3. वही
4. वही
5. जायसी, पद्मावत पृ0 143
6. जायसी, विकिपीडिया पृ0 02
7. वही –
8. फिरदौसी, शाहनामा भूमिका से
9. काव्य शास्त्र राहुलगर्ग पृ0 23
10. वही –
11. जायसी, पद्मावत–पृ0 17
12. श्याम सुंदर, कबीर ग्रंथावली पृ0 117
13. आलेख शशि भूषण सिंहल
14. मीर, विकीपीडिया
15. जायसी, विकीपीडिया
16. माखन लाल चतुर्वेदी, प्रेम से
17. जायसी 'मसला' पृ0 16
18. वही